

# विद्यालयी वातावरण के प्रति छात्र एवं शिक्षक धारणाओं का गुणवत्ता शिक्षा पर प्रभाव

कृष्ण कुमार सरहान<sup>1</sup> and डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र - विभाग

<sup>2</sup>प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र - विभाग

विक्रान्त विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र

## सारांश

विद्यालयी वातावरण शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक है। विद्यालय का भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षणिक वातावरण विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों, व्यवहार, प्रेरणा तथा समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। इसी प्रकार शिक्षकों की विद्यालयी वातावरण के प्रति धारणाएँ उनकी कार्य-संतुष्टि, शिक्षण दक्षता तथा विद्यार्थियों के साथ उनके संबंधों को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन का उद्देश्य विद्यालयी वातावरण के प्रति छात्र एवं शिक्षक धारणाओं तथा गुणवत्ता शिक्षा के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है।

विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के आधार पर यह पाया गया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, उपस्थिति, आत्मविश्वास तथा सामाजिक कौशलों में वृद्धि करता है, जबकि शिक्षकों की सकारात्मक धारणाएँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती हैं (कोहेन 2009)। इसके विपरीत नकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों में तनाव, अनुशासनहीनता तथा कम शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा देता है (थापा 2013)। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि गुणवत्ता शिक्षा की प्राप्ति के लिए विद्यालयी वातावरण को अधिक समावेशी, सुरक्षित एवं सहयोगात्मक बनाना आवश्यक है।

**मुख्य संकेतक:-** विद्यालयी वातावरण, छात्र धारणा, शिक्षक धारणा, गुणवत्ता शिक्षा, शैक्षणिक उपलब्धि।

## परिचय

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का आधार होती है। शिक्षा की गुणवत्ता केवल पाठ्यक्रम या शिक्षण नियोजन पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालयी वातावरण पर भी निर्भर करती है। विद्यालयी वातावरण से तात्पर्य उन सभी परिस्थितियों से है जो विद्यालय के भीतर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के अनुभवों को प्रभावित करती हैं। इसमें विद्यालय की भौतिक संरचना, प्रशासनिक व्यवस्था, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठी संबंध, अनुशासन, सुरक्षा तथा अधिगम संसाधन सम्मिलित होते हैं (होय एवं मिस्केल, 2013)।

छात्र एवं शिक्षक विद्यालयी वातावरण को किस प्रकार अनुभव करते हैं, यह शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। यदि विद्यार्थी विद्यालय को सुरक्षित, सहयोगी और प्रेरणा मानते हैं, तो उनकी सीखने की क्षमता एवं शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। इसी प्रकार यदि शिक्षक विद्यालयी वातावरण को अनुकूल मानते हैं, तो उनकी दक्षता एवं शिक्षण गुणवत्ता में सुधार होता है (ओईसीडी, 2019)।

## विद्यालयी वातावरण की अवधारणा

विद्यालयी वातावरण (स्कूल पर्यावरण) घटक शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक व्यवहार, शैक्षणिक संतुलन और व्यक्तित्व निर्माण को प्रत्यक्ष और व्यक्तित्व रूप से प्रभावित करता है। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का केंद्र नहीं है, बल्कि वह एक ऐसा सामाजिक संस्थान है जहां छात्रों की रुचि, नैतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इस विकास प्रक्रिया की सफलता काफी हद तक विद्यालय के माहौल पर निर्भर करती है। विद्यालयी वातावरण से जुड़े कार्यों में समग्र रूप से भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन शामिल होते हैं जो विद्यालय परिसर में उपस्थित होते हैं और जो विद्यार्थी एवं शैक्षणिक के दृष्टिकोण, व्यवहार एवं दृष्टिकोण से प्रभावित होते हैं। स्कूली वातावरण की गुणवत्ता अधिक सकारात्मक और सहयोगी होगी, छात्रों की सीखने की प्रक्रिया समान रूप से अधिक प्रभावशाली एवं सहायक होगी (कोहेन एट अल., 2009)।

विद्यालयी पर्यावरण की अवधारणा बहुसंख्यक है और इसे केवल विद्यालय भवन या भौतिक सामग्री तक सीमित नहीं किया जा सकता है। इसमें विद्यालय का समग्र परिवेश शामिल होता है, जिसमें विद्यालय का भौतिक ढाँचा, कक्षा-कक्षों की स्थिति, पुस्तकालय, छात्रावास, खेल उपकरण, स्वतंत्रता, सुरक्षा व्यवस्था,

शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठी संबंध, सहपाठी सहयोग, विद्यालय संस्कृति और शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ शामिल हैं। स्कूली माहौल एक ऐसा कारण है जो विद्यार्थियों को सीखने की प्रेरणा, प्रेरणा, विशिष्टता, विशिष्टता और उपलब्धि से प्रभावित करता है। यदि विद्यालय की पर्यावरण सुरक्षा, प्रेरणादायक एवं सहयोगात्मक हो तो विद्यार्थी विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं तथा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं (थापा एवं अन्य, 2013)।

विद्यालयी वातावरण की अवधारणा का विकास समय के साथ हुआ है। प्रारंभिक शिक्षा सिद्धांतों में विद्यालयी वातावरण को मुख्य रूप से भौतिक संरचना एवं अनुशासनात्मक संरचना के संदर्भ में देखा गया था, माध्यमिक आधुनिक शिक्षा शास्त्र में इसे एक व्यापक सामाजिक एवं संरचनात्मक संरचना के रूप में स्वीकार किया गया है। आधुनिक विचारों का मानना है कि विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यवहार, भावनाएँ, दृष्टिकोण और सामाजिक कौशल को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। जॉन डेवी (जॉन डेवी) ने विद्यालय को एक लघु समाज (लघु समाज) की दी थी और कहा था कि विद्यालय के छात्रों को लोकतांत्रिक नैतिकता, सामाजिक सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व की शिक्षा प्रदान की जाती है। इसी प्रकार विगोत्स्की (वायगोत्स्की) ने सामाजिक अंतःक्रियाओं को अधिगम का आधार माना और यह प्रतिपादित किया कि सकारात्मक सामाजिक वातावरण छात्रों के संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है।

स्कूली वातावरण के प्रमुख आयामों में भौतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, मनोवैज्ञानिक वातावरण और आध्यात्मिक वातावरण शामिल हैं। भौतिक पर्यावरण में विद्यालय की इमारतें, प्रकाश, स्वच्छता, स्वच्छता, विश्राम की व्यवस्था, पुस्तकालय, पुस्तकालय और खेल के मैदान जैसी वस्तुएं शामिल हैं। एक सुव्यवस्थित संसाधन-संपन्न विद्यालय के छात्रों के सीखने के अनुभव को बेहतर बनाता है और उनमें विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। अनुसंधान से यह स्पष्ट हो गया है कि अच्छे भौतिक विज्ञानी छात्रों की उपस्थिति, एकाग्रता और शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक हैं (अर्थमैन, 2004)।

सामाजिक पर्यावरण विद्यालयी वातावरण का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम है। इसमें शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठियों के साथ संबंध, सहपाठियों के साथ संबंध, सहपाठियों के साथ संबंध और विद्यालय की सामाजिक संस्कृति शामिल है। जब विद्यालय में छात्र-छात्राएं स्वयं को सुरक्षित एवं स्थापित महसूस करते हैं, तो स्कूल में सामूहिक सम्मान, सहयोग, विश्वास एवं प्रशिक्षण की भावना होती है। सकारात्मक सामाजिक छात्रसंघ, सामाजिक कौशल और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा दिया जाता है। इसके विपरीत यदि विद्यालय में

भेदभाव, हिंसा, उत्पीड़न या असहयोग की स्थिति हो तो छात्रों की सीखने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है (हैमरे एंड पिंटा, 2001)।

मनोवैज्ञानिक पर्यावरण विद्यालयी माहौल का एक अत्यंत आकर्षक पक्ष है। इसके संबंध में छात्र और परमाणु ऊर्जा विभाग की परमाणु सुरक्षा, आत्मसम्मान, मानसिक स्वास्थ्य और विद्यालय के प्रति उनकी भावनाएँ होती हैं। जब छात्र स्कूल में सम्मान, सुरक्षा एवं समर्थन का अनुभव करते हैं, तब वे अधिक छात्रों के साथ सीखने की पढ़ाई में भाग लेते हैं। सकारात्मक मनोवैज्ञानिक माहौल तनाव, भय और चिंता को कम करता है और छात्रों में रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है। आधुनिक शिक्षा शास्त्र के शिक्षण में विशिष्टता के आधार पर विशिष्टता नहीं रखी जाती है, बल्कि साँचे और सामाजिक आदर्शों पर भी आधारित होती है (वांग और डेगोल, 2016)।

शैक्षणिक वातावरण विद्यालयी वातावरण का वह आयाम है जो प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से संबंधित होता है। इसमें शिक्षकों की शिक्षण शैली, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन प्रणाली, शिक्षण मानदंडों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों को प्रदान किया जाने वाला अकादमी समर्थन सम्मिलित है। प्रभावी शिक्षण पद्धतियाँ, नवीनतापूर्ण शब्दावली, प्रौद्योगिकी का उपयोग तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिगम अवसर गुणवत्ता शिक्षा को बढ़ावा देते हैं। एक सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करता है तथा उन्हें अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग करने का अवसर प्रदान करता है (OECD, 2019)।

विद्यालयी वातावरण की अवधारणा का संबंध गुणवत्ता शिक्षा से भी अत्यंत गहरा है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-4 (SDG-4) में समावेशी एवं गतिशील शिक्षा सुनिश्चित करने पर बल दिया गया है। गुणवत्ता शिक्षा की प्राप्ति तभी संभव है जब विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं क्षमताओं के अनुरूप हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस बात पर जोर देती है कि उद्देश्यों में ऐसा वातावरण विकसित किया जाए जो विद्यार्थियों में जिज्ञासा, विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक चिंतन तथा नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दे। इस प्रकार विद्यालयी वातावरण शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन माना जाता है।

वर्तमान समय में विद्यालयी वातावरण की अवधारणा केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समावेशिता, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य, जीवन कौशल तथा डिजिटल अधिगम जैसे नए आयाम भी जुड़ गए हैं। आधुनिक कार्यक्षेत्र में यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में सफलता

के लिए नहीं, बल्कि जीवन की विशेषज्ञता का सामना करने के लिए भी तैयार करें। इसके लिए कार्यक्षेत्र को ऐसा वातावरण विकसित करना होगा जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर, सम्मान एवं विकास के अवसर प्राप्त हों।

विद्यालयी वातावरण शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया का आधार है। यह विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक व्यवहार तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। सकारात्मक, सुरक्षित, सहयोगी एवं संसाधन-संपन्न विद्यालयी वातावरण गुणवत्ता शिक्षा की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों, जुड़ाव तथा नीति-निर्माताओं को मिलकर ऐसा वातावरण विकसित करने का प्रयास करना चाहिए जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित कर सके।

विद्यालयी वातावरण को विद्यालय के समग्र सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं भौतिक परिवेश के रूप में परिभाषित किया जाता है जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है। कोहेन (2009) के अनुसार विद्यालयी वातावरण में चार प्रमुख आयाम शामिल हैं: -

1. सुरक्षा
2. शिक्षण एवं अधिगम
3. संबंध
4. संस्थागत वातावरण

इन सभी आयामों का विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की धारणाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

### **छात्र धारणाएँ एवं गुणवत्ता शिक्षा**

विद्यार्थियों की विद्यालयी वातावरण के प्रति धारणा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, प्रेरणा तथा विद्यालय से गतिविधि को प्रभावित करती है। वांग और डेगोल (2016) के अनुसार जिन मानदंडों में विद्यार्थी सकारात्मक वातावरण का अनुभव करते हैं, वहाँ उनकी अकादमी उपलब्धियाँ अधिक होती हैं।

### **छात्र धारणाओं के प्रमुख प्रभाव**

1. अधिगम प्रेरणा में वृद्धि
2. विद्यालय से जुड़ाव की भावना
3. आत्मविश्वास एवं आत्म-सम्मान में वृद्धि
4. अनुशासन संबंधी समस्याओं में कमी
5. शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार

लूकास (2007) के अध्ययन में पाया गया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में तनाव एवं अवसाद को कम करता है तथा उनकी सामाजिक सहभागिता को बढ़ाता है।

### तालिका 1: छात्र धारणाओं का गुणवत्ता शिक्षा पर प्रभाव

छात्र धारणा का आयाम	प्रभाव
विद्यालय की सुरक्षा	सीखने में एकाग्रता बढ़ती है
शिक्षक सहयोग	शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार
सहपाठी संबंध	सामाजिक कौशल विकसित होते हैं
संसाधनों की उपलब्धता	अधिगम की गुणवत्ता बढ़ती है
सकारात्मक अनुशासन	विद्यालय से जुड़ाव बढ़ता है

### शिक्षक धारणाएँ एवं गुणवत्ता शिक्षा

शिक्षकों की विद्यालयी वातावरण के प्रति धारणा शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। यदि शिक्षक विद्यालय प्रशासन, कार्य परिस्थितियों तथा सहयोगी संस्कृति से संतुष्ट होते हैं, तो उनका प्रदर्शन बेहतर होता है (कॉली 2012)।

शिक्षकों की सकारात्मक धारणा निम्नलिखित लाभ प्रदान करती है: -

1. शिक्षण में नवाचार
2. विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
3. कार्य-संतुष्टि में वृद्धि
4. पेशेवर विकास की प्रवृत्ति
5. कक्षा प्रबंधन में सुधार

जॉनसन (2012) के अनुसार सहयोगात्मक विद्यालयी संस्कृति शिक्षकों के व्यावसायिक विकास तथा विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

**तालिका 2: शिक्षक धारणाओं एवं गुणवत्ता शिक्षा का संबंध**

शिक्षक धारणा	गुणवत्ता शिक्षा पर प्रभाव
प्रशासनिक सहयोग	प्रभावी शिक्षण
कार्य संतुष्टि	बेहतर प्रदर्शन
व्यावसायिक विकास अवसर	नवीन शिक्षण रणनीतियाँ
सकारात्मक कार्य वातावरण	छात्र उपलब्धि में वृद्धि
सहयोगात्मक संस्कृति	अधिगम परिणामों में सुधार

**विद्यालयी वातावरण के प्रमुख घटक**

**(क) भौतिक वातावरण**

विद्यालय भवन, कक्षाएं, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं तथा खेल सुविधाएं विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को प्रभावित करती हैं (अर्थमैन, 2004)।

**(ख) सामाजिक वातावरण**

शिक्षक-विद्यार्थी तथा सहपाठी संबंध विद्यालयी वातावरण का महत्वपूर्ण भाग हैं। सकारात्मक संबंध अधिगम को प्रोत्साहित करते हैं (हैमरे और पियांटा, 2001)।

**(ग) मनोवैज्ञानिक वातावरण**

सुरक्षा, सम्मान एवं भावनात्मक समर्थन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक हैं

**(घ) शैक्षणिक वातावरण**

अध्यापन की गुणवत्ता, मूल्यांकन पद्धतियाँ तथा शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता अधिगम परिणामों को प्रभावित करती हैं

## 6. विद्यालयी वातावरण एवं गुणवत्ता शिक्षा के मध्य संबंध

शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण और गुणवत्ता शिक्षा के बीच सकारात्मक संबंध है। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, रचनात्मकता एवं सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है। वहीं नकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों में अनुपस्थिति, कम उपलब्धि तथा व्यवहारिक समस्याओं को बढ़ाता है

शिक्षकों की सकारात्मक धारणाएँ विद्यालय में नवाचार, प्रभावी कक्षा प्रबंधन तथा विद्यार्थियों के बेहतर अधिगम परिणामों को प्रोत्साहित करती हैं। इस प्रकार छात्र एवं शिक्षक दोनों की धारणाएँ गुणवत्ता शिक्षा की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

### तालिका 3: विद्यालयी वातावरण एवं गुणवत्ता शिक्षा का समग्र प्रभाव

विद्यालयी वातावरण का घटक	छात्र प्रभाव	शिक्षक प्रभाव	गुणवत्ता शिक्षा पर प्रभाव
सुरक्षा	आत्मविश्वास	कार्य संतुष्टि	उच्च
सकारात्मक संबंध	सहभागिता	सहयोग	उच्च
संसाधन उपलब्धता	बेहतर अधिगम	प्रभावी शिक्षण	उच्च
प्रशासनिक समर्थन	प्रेरणा	व्यावसायिक विकास	उच्च
अनुशासन	नियमित उपस्थिति	बेहतर प्रबंधन	उच्च

## निष्कर्ष

समीक्षित साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण के प्रति छात्र एवं शिक्षक धारणाएँ गुणवत्ता शिक्षा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, आत्मविश्वास, प्रेरणा तथा सामाजिक विकास को बढ़ाता है, जबकि शिक्षकों की सकारात्मक धारणाएँ शिक्षण की प्रभावशीलता, कार्य-संतुष्टि तथा नवाचार को प्रोत्साहित करती हैं। इसलिए विद्यालयों में सुरक्षित,

सहयोगात्मक, समावेशी तथा संसाधन-संपन्न वातावरण का निर्माण गुणवत्ता शिक्षा के लिए अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

### संदर्भ सूची

1. अर्थमैन, जी. आई. (2004)। 21वीं सदी के स्कूलों की भव्यता को बढ़ावा देना। अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनिन फाउंडेशन।
2. ओईसीडी. (2019)। एजुकेशन एट ए ग्लॉस 2019। पेरिस: ओईसीडी प्रकाशन।
3. कोली, आर. जे., शपका, जे. डी., पेरी औरी, एन. ई. (2012)। स्कूल का शैक्षणिक और सामाजिक-भावनात्मक अध्ययन। शैक्षिक मनोविज्ञान, 32(10), 1189-1204।
4. कोहेन, जे., मैककेबे, ई. एम., मिशेली, एन. एम., और पिकरल, टी. (2009)। स्कूल का मोट्टेरे: क्लिनिक, सिटिजनशिप, प्रैक्टिस और टीचर एजुकेशन। टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 111(1), 180-213।
5. जॉनसन, बी., स्टीवंस, जे. जे., और ज्वोच, के. (2012)। स्कूल के छात्रों की सोच के बारे में। एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल मेज़रमेंट, 67(5), 833-844।
6. थापा, ए., कोहेन, जे., गफ़ी, एस., और हिगिंस-डी'एलेसेंड्रो, ए. (2013)। स्कूल के शोक की समीक्षा। शैक्षिक अनुसंधान की समीक्षा, 83(3), 357-385।
7. लुकास, ए. (2007)। स्कूल का माहौल क्या है? लीडरशिप कंपास, 5(1), 1-3।
8. वांग, एम. टी., और डेगोल, जे. एल. (2016)। स्कूल का स्मारक: कॉन्सेप्ट और मोटोरोला के स्टाल का इसका असर की समीक्षा। शैक्षिक साइकोलॉजी समीक्षा, 28(2), 315-352।
9. हमरे, बी. के., और पियान्टा, आर. सी. (2001)। प्रारंभिक शिक्षक-बच्चे के विकल्प और शैक्षणिक परिणाम। परियोजना, 72(2), 625-638।
10. होय, डब्ल्यू. के., और मिस्केल, सी. जी. (2013)। शैक्षिक प्रशासन उद्देश्य: थ्योरी, अनुसंधान और अभ्यास। न्यूयॉर्क: मैकग्रा-हिल।